5

तिहारे ध्यान की मूरत, अजब छवि को दिखाती है।
विषय की वासना तज कर, निजातम लौ लगाती है ॥टेक॥

तेरे दर्शन से हे स्वामी, लखा है रूप मैं मेरा।
तजूँ कब राग तन धन का, ये सब मेरे विजाती हैं ॥1॥

जगत के देव सब देखे, कोई रागी कोई द्वेषी।
किसी के हाथ आयुध है, किसी को नार भाती है ॥2॥

जगत के देव हठ ग्राही, कुनय के पक्षपाती हैं।
तू ही सुनय का है वेत्ता, वचन तेरे अघाती हैं ॥3॥

मुझे कुछ चाह नहीं जग की, यही है चाह स्वामी जी।
जपूँ तुम नाम की माला, जो मेरे काम आती है ॥4॥

तुम्हारी छवि निरख स्वामी, निजातम लौ लगी मेरे।
यही लौ पार कर देगी, जो भक्तों को सुहाती है ॥5॥

प्रभु हम सबका एक तु ही है तारणहारा रे।
तुम को भूला फिरा वही, नर मारा-मारा रे ॥टेक॥
बड़ा पुण्य अवसर यह आया, आज तुम्हारा दर्शन पाया।
फूला मन यह हुआ सफल, मेरा जीवन सारा रे ॥1॥
भक्ति में अब चित्त लगाया, चेतन में अब चित् ललचाया।
वीतरागी देव करो अब भव से पारा रे ॥2॥
जीवन में मैं नाथ को पाऊँ, वीतरागी भाव बढ़ाऊँ।
भक्ति भाव से प्रभु चरणों में जाऊँ-जाऊँ रे ॥3॥
अब तो मेरी ओर निहारो, भव समुद्र से नाव उबारो ।
पंकज का लो हाथ पकड़, मैं पाऊँ किनारा रे ॥4॥

जिनवाणी अमृत रसाल, रसिया आओ रे सुणवा।
आओ रे सुणवा आओ रे सुणवा ॥टेक॥

छह द्रव्यों का ज्ञान करावे, नव तत्त्वों का रहस्य बतावे।
आतम प्रभु है महान, रसिया आओ रे सुणवा ॥1॥

विषय-कषाय का नाश करावे, निज-आतम से प्रीति बढ़ावे।
मिथ्यात्व का होवे नाश, रसिया आओ रे सुणवा ॥2॥

अनेकांतमय धर्म बतावे, स्याद्वाद शैली कथन में आवे।
भवसागर से होवे पार, रसिया आओ रे सुणवा ॥3॥

जो जिनवाणी सुन हर्षावे, निश्चय ही वह भव्य कहावे।
दिगम्बर धर्म महान, रसिया आओ रे सुणवा ॥4॥

परम दिगम्बर मुनिवर देखे, हृदय हर्षित होता है ।
आनन्द उल्लसित होता है, होऽऽ सम्यग्दर्शन होता है ॥टेक॥
वास जिनका वन उपवन में, गिरी शिखर के नदी तटे ।
वास जिनका चित्त गुफा में, आतम आनन्द में रमें ॥1॥
कंचन-कामिनी के त्यागी, महा-तपस्वी ज्ञानी-ध्यानी ।
काया की माया के त्यागी, तीन रतन गुण भंडारी ॥2॥
परम पावन मुनिवरों के, पावन चरणों में नमूँ ।
शांत मूर्ति सौम्य मुद्रा, आतम आनन्द में रमूँ ॥3॥
चाह नहीं है राज्य की, चाह नहीं है रमणी की ।
चाह हृदय में एक यही है, मुक्ति वधू को वरने की ॥4॥
भेद ज्ञान की ज्योति जलाकर, शुद्धातम में रमते हैं ।
क्षण-क्षण में अन्तर्मुख हो, सिद्धों से बातें करते हैं ॥5॥

गुरु बिन ज्ञान न होय जगत में, परमारथ में आतमराम ।

ચૌવીસ તીર્થંકરોની આરતી

અઘહર શ્રી જિનબિંબ મનોહર ચૌવીસ જિનકા કરો ભજન,
આજ દિવસ કંચન સમ ઉગિયો, જિનમંદિરમેં ચલો સજન. ટેક

ન્હવન થાપના સહસ્ત્રનામ પઢ, અષ્ટવિધાર્ચન પૂજ રચન,
આરતિ અરુ જયમાલ સ્તુતિ, સ્વાધ્યાય ત્રયકાલ પઠન;
જય જય આરતિ સુરનર નાચત, અનહદ દુંદુભિ બાજે બજન;
રત્નજડિત કર થાલ મનોહર, જ્યોતિ અનુપમ ધૂમ્રતજન. અઘ૦ ૧

ઋષભ, અજિત, સંભવ સુખદાતા, અભિનંદન કે નમૂં ચરન,
સુમતિ, પદ્મપ્રભ, દેવ સુપારસ, ચન્દ્રનાથ વપુ શુભ્રવરન;
પુષ્પદંત, શીતલ, શ્રેયાંસ અરુ, વાસુપૂજ્ય ભવ તારતરન,
વિમલ, અનંત, ધર્મ જિન શાંતિ, કુંથુ, અરહ હર જન્મમરણ. અઘ૦ ૨

મલ્લિનાથ, મુનિસુવ્રત, નમિ જિન, નેમિ, પાર્શ્વ હર અષ્ટ કરમ,
નાશવંત હૈ ઉન્નત કર સત, અંતિમ સન્મતિ દેવ શરન;
સમવસરણકી અગણિત શોભા, બાર સભા ઉપદેશ ધરન,
જિન ઉદ્ધારક, ત્રિભુવન તારક, રાવ–રંકકો હૈ જુ શરન. અઘ૦ ૩

તીર્થંકર ગુણ–માલ કંઠકર, જાપ જપો તિન કરો કથન;
દેવ-શાસ્ત્ર-ગુરુ વિનય કરો, ઈન તીન રતનકા કરો જતન. અઘ૦ ૪